2. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

[The Sources of Ancient Indian History]

प्राचीन भारतीय इतिहास के विविध स्रोत हैं। यद्यपि प्राचीन भारतीयों में इतिहास-लेखन की वैसी श्रृंखलाबद्ध परंपरा नहीं थी, जैसा हम प्राचीन यूनान या रोम में पाते हैं, तथापि प्राचीन भारत में विभिन्न विषयों से संबद्ध अनेक ऐसे ग्रंथों की रचना हुई, जो प्राचीन इतिहास की जानकारी उपलब्ध कराते हैं। इन ग्रंथों की विषयवस्तु धर्म; सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन और प्रशासनिक व्यवस्था तथा नीतिशास्त्र से संबद्ध है। अनेक काव्यों, महाकाव्यों और नाटकों की भी रचना प्राचीन भारत में हुई, जो तत्कालीन अवस्था की जानकारी प्रदान करते हैं। साहित्यिक स्रोतों के अतिरिक्त पुरातात्त्विक साधनों से भी हमें प्राचीन भारतीय इतिहास का ज्ञान प्राप्त होता है।

2.1. ऐतिहासिक स्रोतों का वर्गीकरण *(Classification of the Sources)*

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों को मुख्यरूप से दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—**साहित्यिक स्रोत** एवं **पुरातात्त्विक स्रोत**। साहित्यिक स्रोतों की भी अनेक श्रेणियाँ बनाई जा सकती हैं। मोटे तौर पर साहित्यिक साधनों को देशी और विदेशी साहित्य के अंतर्गत रखा जा सकता है। पुनः, देशी साहित्य में धार्मिक एवं अर्द्ध-ऐतिहासिक श्रेणियाँ बनाई जा सकती हैं। इसी प्रकार, विदेशी साहित्य के अंतर्गत हम उन यूनानी, रोमन, चीनी, तिब्बती, अरब और तुर्क यात्रियों के यात्रा विवरणों को रख सकते हैं जिन्होंने भारतीय इतिहास, सभ्यता एवं संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे हैं। भारतीय इतिहास के लिए साहित्यिक स्रोत ही यथेष्ट नहीं हैं। अनेक विस्मृत संस्कृतियों एवं महत्त्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी हमें पुरातात्त्विक साधनों से भी मिलती है। वस्तुतः, पुरातात्त्विक सामग्री भारतीय इतिहास की उन अनेक विस्मृत घटनाओं से हमारा परिचय कराती है, जिनका उल्लेख साहित्यिक ग्रंथों में नहीं मिलता है। इसके अतिरिक्त भारतीय साहित्य एवं विदेशी यात्रियों के अनेक विवरणों को पुष्ट करने में भी इनसे सहायता मिलती है। उत्खननों द्वारा प्राप्त पुरावशेष, मुद्रा, अभिलेख इत्यादि भारतीय इतिहास एवं सभ्यता के विभिन्न आयामों को प्रकट करते हैं। अतः, साहित्यिक स्रोतों के अतिरिक्त पुरातात्त्विक साधनों की जानकारी भी नितांत आवश्यक है। वस्तुतः, दोनों वर्गों के स्रोतों के संतुलित अध्ययन के आधार पर ही प्राचीन भारतीय इतिहास का निरपेक्ष अध्ययन किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

2.1 (a). साहित्यिक स्रोत (*The Literary Sources*)

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत के रूप में विभिन्न साहित्यिक ग्रंथों का अपना अलग ही महत्त्व है। यद्यपि साहित्यिक स्रोत अनेक त्रुटियों से परिपूर्ण हैं, उनमें ऐतिहासिकता एवं तिथिक्रम का अभाव है, विवरण अतिशयोक्तिपूर्ण हैं और इनमें पूर्वाग्रह भी देखने को मिलता है, तथापि इन ग्रंथों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। साहित्यिक ग्रंथ भारतीय इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर जितना अधिक प्रकाश डालते हैं, उनकी तुलना में पुरातात्त्विक साधनों का योगदान, विशेषतया आर्यों की प्रारंभिक सभ्यता के संदर्भ में कम ही है। वस्तुतः, साहित्यिक ग्रंथों से प्राप्त जानकारी को अन्य स्रोतों की सहायता से ऐतिहासिकता की कसौटी पर कसकर ही भारतीय इतिहास की सही जानकारी प्राप्त हो सकती है।

उपलब्ध साहित्य, जो भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायता प्रदान करते हैं, उन्हें मोटे तौर पर दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—देशी साहित्य और विदेशी साहित्य। देशी

Scanned with CamScanner

साहित्य के भी दो भाग हैं—धर्मग्रंथ और ऐतिहासिक तथा अर्द्ध-ऐतिहासिक साहित्यिक ग्रंथ। विदेशी साहित्य के अंतर्गत अनेक वैसे यात्रियों के यात्रा-विवरण हैं, जो समय-समय पर भारत आए, यहाँ की स्थिति को अपनी आँखों से देखा और उनका विवरण हमारे लिए लिख छोड़ा है। इन सभी ग्रंथों से भारतीय इतिहास की जानकारी हमें प्राप्त होती है।

देशी साहित्य—भारतीय इतिहास पर सबसे अधिक प्रकाश देशी साहित्य से ही पड़ता है। देशी साहित्य की संख्या बहुत बड़ी है। इसमें धार्मिक ग्रंथ, ऐतिहासिक ग्रंथ, अर्द्ध-ऐतिहासिक ग्रंथ, महाकाव्य, काव्य, नाटक, विभिन्न विषयों से संबद्ध ग्रंथ इत्यादि रखे जा सकते हैं। इन ग्रंथों से प्राचीन भारत के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी मिलती है।

धार्मिक ग्रंथ—देशी साहित्य में सबसे प्रमुख स्थान धार्मिक साहित्य का है। ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन धर्मों से संबद्ध अनेक ग्रंथों की रचना प्राचीन भारत में हुई, जो विस्मृत इतिहास पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं।

(क) **ब्राह्मण-धर्मग्रंथ**—धार्मिक ग्रंथों में सबसे प्रमुख स्थान ब्राह्मण-धर्मग्रंथों का है। यद्यपि अन्य धर्मग्रंथों की ही तरह ब्राह्मण-धर्मग्रंथों की रचना भी धार्मिक भावना से प्रेरित होकर ही हुई थी, उनमें ऐतिहासिकता का अभाव है, राजनीतिक महत्त्व के कम तथ्य हैं, तथापि सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन के लिए उनके महत्त्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती। ब्राह्मण-धर्मग्रंथ अनेक प्रकार के हैं; जैसे—**वेद**, **ब्राह्मण-धर्मग्रंथ**, **आरण्यक**, **उपनिषद**, **वेदांग**, **स्मृति** इत्यादि।

Scanned with CamScanner

अनेक प्रकार ...

वेद (संहिता या श्रुति)—ब्राह्मण-धर्मग्रंथों में सर्वश्रेष्ठ स्थान वेदों, श्रुति या संहिता को प्रदान किया गया है। इनकी संख्या चार है—**ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद** और **अथर्ववेद**। इन चारों वेदों में सबसे प्रधान **ऋग्वेद** है। यह आर्यों का प्राचीनतम ग्रंथ है। आर्यों के प्रारंकि जीवन की जानकारी प्राप्त करने का यह एकमात्र साधन है; क्योंकि पुरातात्त्विक प्रमाण भी आर्यों के प्रारंभिक जीवन की जानकारी नहीं देते। **ऋग्वेद** 10 **मंडलों** एवं 1028 **सूक्तों** में विभक्त है। दूसरे से नवें मंडल तक के सूक्त सबसे पुराने हैं; प्रथम और अंतिम मंडल बाद में जोड़े गए। इस ग्रंथ में विभिन्न देवताओं की स्तुति में गाए गए मंत्रों का संग्रह है। **ऋग्वेद** की रचना किस समय हुई, यह निश्चित तौर पर बताना कठिन है। संभवतः, इसकी रचना 1500-1000 ई० पू० के बीच सप्त-सैंधव प्रदेश में हुई थी। **ऋग्वेद** और ईरानी ग्रंथ **जेंद अवेस्ता** *(Zenda Avesta)* में आश्चर्यजनक समानता पाई जाती है। दूसरा प्रमुख वेद **सामवेद** है। यह गान-प्रधान ग्रंथ है। इसमें उन ऋचाओं का संग्रह है, जिन्हें पुरोहित **(उद्गाता)** यज्ञ के समय गाते थे। इस वेद से कोई नई जानकारी नहीं मिलती है। इसमें करीब 1550 मंत्र हैं, जिनमें से 75 के अतिरिक्त सभी ऋग्वेद में मिलते हैं। **यजुर्वेद** में विभिन्न यज्ञ-विधियों का संग्रह है। इसकी पाँच शाखाएँ हैं—**काठक, कपिष्ठल, मैत्रायणी, तैत्तिरीय** और **वाजसनेयी**। इनमें से प्रथम चार 'कृष्ण' या 'श्याम' (black) **यजुर्वेद** और अंतिम 'शुक्ल' (white) **यजुर्वेद** के नाम से विख्यात है। 'शुक्ल' में सिर्फ मंत्र हैं परंतु 'कृष्ण' में मंत्रों के साथ-साथ उनकी व्याख्या भी मिलती है। यजुर्वेद से उत्तर-वैदिक युग की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक जीवन की जानकारी मिलती है। अंतिम वेद **अथर्ववेद** है। यह 20 मंडलों में विभक्त है। इसमें करीब 731 ऋचाएँ पद्य और गद्य में हैं। इसमें जादू-मंत्र, टोना, ताबीज, चिकित्सा, धनुर्विद्या इत्यादि से संबद्ध तथ्य हैं। **ऋग्वेद** के अतिरिक्त अन्य वेदों और वैदिक साहित्य की रचना करीब 1000-500 ई० पू० के मध्य कुरु-पांचाल-क्षेत्र में हुई थी। वेदों से आर्यों के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन की जानकारी मिलती है। इस प्रकार, वेद भारतीय इतिहास के प्रमुख स्रोत हैं।

ब्राह्मणग्रंथ—वेदों के पश्चात ब्राह्मणग्रंथ आते हैं। इन्हें पद्य में रचा गया। इन्हें वेदों की टीका कहा जा सकता है। उत्तर-वैदिक आर्यों की सभ्यता पर इनसे महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। प्रत्येक **ब्राह्मण** एक **वेद** या **संहिता** से संबद्ध है। **ऐतरेय** और **कौषीतकी ब्राह्मण ऋग्वेद** से, **शतपथब्राह्मण यजुर्वेद** से, **पंचविंशब्राह्मण सामवेद** से तथा **गोपथ-ब्राह्मण अथर्ववेद** से संबद्ध हैं। ब्राह्मणग्रंथ आर्यों के राजनीतिक जीवन के अतिरिक्त सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करते हैं तथापि इनमें मुख्यतः यज्ञों एवं उनकी विधियों का वर्णन किया गया है।

आरण्यक—ब्राह्मणग्रंथ का ही भाग **आरण्यक** भी हैं। ये ग्रंथ अरण्यों (वनों) में निवास करनेवाले संन्यासियों के मार्गदर्शन के लिए लिखे गए थे। इनमें यज्ञों एवं धार्मिक अनुष्ठानों के

Scanned with CamScanner

अतिरिक्त दार्शनिक प्रश्नों की भी चर्चा की गई है, जो भारतीय दर्शन का ज्ञान उपलब्ध कराते हैं। प्रमुख **आरण्यकों** में **ऐतरेय, तैत्तिरीय** और **मैत्रायणी** आरण्यकों का उल्लेख किया जा सकता है। आरण्यकों ने जिस दार्शनिक विचारधारा का आरंभ किया उसका विकास उपनिषदों में हुआ।

उपनिषद—आरण्यकों में जिस दार्शनिक विचारधारा का प्रारंभ हम पाते हैं, उन्हीं का विस्तृत स्वरूप उपनिषदों में देखने को मिलता है। वस्तुतः, उपनिषदों में प्राचीन भारत का दार्शनिक ज्ञान सुरक्षित है। इन ग्रंथों में जीव, आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म, कर्म तथा सृष्टि से संबद्ध दार्शनिक एवं रहस्यात्मक प्रश्नों की विवेचना की गई है। इन ग्रंथों में धार्मिक कर्मकांडों, यज्ञ, बलि इत्यादि की तीखी आलोचना भी की गई है। उपनिषदों की संख्या 108 है। प्रमुख उपनिषदों में ईश, **केन, कठ, छांदोग्य, बृहदारण्यक** इत्यादि का उल्लेख किया जा सकता है। उपनिषदों से राजनीतिक इतिहास का भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इनकी रचना लगभग 800-500 ई० पू० के मध्य हुई। उपनिषदों ने जिस निष्काम कर्म मार्ग और भक्ति मार्ग का दर्शन दिया उसका विकास **भगवद्गीता** में हुआ।

वेदांग—वेदांग वेद के अंतिम भाग माने जाते हैं। वैदिक अध्ययन के लिए विद्या की विशिष्ट शाखाओं का जन्म हुआ, जो **वेदांग** के रूप में विख्यात हुए। **मुंडक-उपनिषद** में वेदांगों का उल्लेख किया गया है। ये वेदांग थे—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष। वैदिक मंत्रों के सही उच्चारण के लिए 'शिक्षा' का विकास हुआ। 'कल्प' में विभिन्न विधानों का संकलन है, जो **कल्पसूत्र** के नाम से विख्यात है। कल्पसूत्र चार भागों में विभक्त है—**श्रौतसूत्र** (यज्ञ-संबंधी नियम), **गृह्यसूत्र** (मानव-जीवन के कार्यकलाप से संबद्ध संस्कार, नियम इत्यादि), **धर्मसूत्र** (सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक नियम) तथा **शुल्वसूत्र** (यज्ञ एवं हवनकांडों से संबद्ध नियमों का संकलन)। सूत्र-साहित्य की रचना गद्य और पद्य दोनों में की गई। सूत्र-साहित्य में प्रमुख हैं **आपस्तंब गृह्यसूत्र, बौधायन गृह्यसूत्र, आपस्तंब धर्मसूत्र, बौधायन धर्मसूत्र, गौतम धर्मसूत्र, अश्वलायन श्रौतसूत्र** इत्यादि। भाषा के विकास के साथ 'व्याकरण' की आवश्यकता पड़ी। इस विषय पर दो प्रमुख ग्रंथ लिखे गए—पाणिनि की **अष्टाध्यायी** एवं पतंजलि का **महाभाष्य**। यास्क ने **निरुक्त** की रचना की जिसमें शब्दों की उत्पत्ति, निर्माण तथा अर्थ की विवेचना की गई। 'छंद' के विकास से भाषा के विकास एवं छंद के प्रयोग की जानकारी मिलती है। 'ज्योतिष' में ब्रह्मांड, सौरमंडल, नक्षत्रों इत्यादि का वर्णन किया गया। इस विषय पर बाद में वराहमिहिर ने **बृहत्संहिता** लिखी, जो भारतीय ज्योतिष की प्रामाणिक जानकारी देती है। ये सारे ग्रंथ प्राचीन भारतीय इतिहास, सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी प्राप्त करने में हमारी सहायता करते हैं।

Scanned with CamScanner

उपवेद एवं षड्दर्शन—वैदिक साहित्य की श्रेणी में उपवेदों और भारतीय दर्शन की 6 शाखाओं (षड्दर्शन) को भी स्थान दिया जाता है। उपवेद में सबसे प्रमुख स्थान **आयुर्वेद** का है। इसके अंतर्गत विभिन्न रोगों की पहचान, उनकी दवा, जड़ी-बूटियों आदि का महत्त्व बताया गया है। कहा जाता है कि इस विद्या के जन्मदाता प्रजापति (ब्रह्मा) थे। आयुर्वेद के आठ भाग हैं—शल्य, शालाक्य, काय-चिकित्सा, भूतविद्या, कुमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायन और वाजीकरण।[2] अन्य उपवेदों में **धनुर्वेद** (युद्धकला), **गंधर्ववेद** (संगीतकला) और **शिल्पवेद** (भवननिर्माणकला) आते हैं। धनुर्वेद के जन्मदाता विश्वामित्र, गंधर्व के नारद और शिल्प के विश्वकर्मा माने जाते हैं। इन ग्रंथों से प्राचीन भारत में प्रचलित विभिन्न विधाओं का ज्ञान हमें प्राप्त होता है। दर्शन की शाखाओं में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा आते हैं। इनसे भारतीय दर्शन के विभिन्न आयामों का पता चलता है। इनका रचना काल छठी शताब्दी ई० पू० से तीसरी शताब्दी ई० पू० माना जाता है। **न्याय दर्शन** के प्रवर्तक गौतम थे जिन्होंने तर्क पर बल दिया। **वैशेषिक दर्शन** के संस्थापक कणद ऋषि थे जिन्होंने पदार्थ को अपने दर्शन का आधार बनाया। **सांख्य दर्शन** ईश्वर में विश्वास नहीं रखता है। कपिल ने इसकी

Ritual, Grammar, Etymology, Metrics and

Scanned with CamScanner